महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» महात्मा गाँधी का भारत आगमन और प्रारंभिक राजनीतिक अनुभव

प्रश्न 1 (आसान). गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में कितने समय तक रहे थे?
उत्तर – बीस साल से ज़्यादा

प्रश्न 2 (आसान). गांधीजी के राजनीतिक गुरु का नाम क्या था?
उत्तर – गोपाल कृष्ण गोखले

प्रश्न 3 (मध्यम). गांधीजी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में किस बात पर जोर दिया था?
उत्तर – उन्होंने अमीर और पढ़े-लिखे लोगों की भीड़ के सामने गरीब किसानों और मजदूरों की अनदेखी पर चिंता व्यक्त की और कहा कि सच्ची आज़ादी तभी मिलेगी जब हम उनकी परवाह करेंगे।

प्रश्न 4 (कठिन). दक्षिण अफ्रीका ने गांधीजी को 'महात्मा' कैसे बनाया? दो मुख्य कारण बताएं।
उत्तर – दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने पहली बार सत्याग्रह (अहिंसक विरोध) की अपनी तकनीक का इस्तेमाल किया। दूसरा, उन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया और ऊँची जातियों के भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेदभाव वाले व्यवहार के लिए फटकारा। इन्हीं अनुभवों ने उन्हें एक प्रभावी नेता के रूप में गढ़ने में मदद की।

» चंपारण, अहमदाबाद, खेड़ा: स्थानीय संघर्षों का राष्ट्रीय मंच

प्रश्न 5 (आसान). चंपारण आंदोलन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1917

प्रश्न 6 (आसान). अहमदाबाद आंदोलन किसके लिए था?
उत्तर – कपड़ा मिल मज़दूरों के लिए

प्रश्न 7 (मध्यम). खेड़ा में किसानों की मुख्य मांग क्या थी?
उत्तर – लगान की माफी

प्रश्न 8 (कठिन). गांधी जी ने इन आंदोलनों में कौन सी नई तकनीक का प्रयोग किया?
उत्तर – सत्याग्रह और भूख हड़ताल

» रॉलेट सत्याग्रह और जलियाँवाला बाग हत्याकांड

प्रश्न 9 (आसान). रॉलेट एक्ट किस वर्ष पारित हुआ था?
उत्तर – 1919

प्रश्न 10 (आसान). रॉलेट एक्ट का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – बिना मुकदमा चलाए किसी को भी गिरफ्तार करना।

प्रश्न 11 (मध्यम). रॉलेट सत्याग्रह का नेतृत्व किसने किया था?
उत्तर – महात्मा गांधी

प्रश्न 12 (कठिन). जलियाँवाला बाग हत्याकांड किस तिथि को हुआ था और इसके लिए कौन जिम्मेदार था?
उत्तर – 13 अप्रैल 1919; जनरल डायर।

» असहयोग आंदोलन की शुरुआत और व्यापकता

प्रश्न 13 (आसान). असहयोग आंदोलन कब शुरू हुआ?
उत्तर – 1920 में।

प्रश्न 14 (आसान). असहयोग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – एक वर्ष में स्वराज प्राप्त करना।

प्रश्न 15 (मध्यम). गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन क्यों किया?
उत्तर – हिंदू और मुसलमान समुदायों को एकजुट करने और आंदोलन को और मज़बूत बनाने के लिए।

प्रश्न 16 (कठिन). असहयोग आंदोलन की व्यापकता ने इसे रॉलेट सत्याग्रह से कैसे अलग बनाया?
उत्तर – रॉलेट सत्याग्रह मुख्य रूप से शहरी और शिक्षित लोगों तक सीमित था, जबकि असहयोग आंदोलन में किसानों, मज़दूरों, जनजातियों सहित समाज के हर वर्ग ने बड़े पैमाने पर भाग लिया, जिससे यह एक सच्चा जन-आंदोलन बन गया।

» असहयोग आंदोलन का जन-आधार और वापसी

प्रश्न 17 (आसान). असहयोग आंदोलन में कौन-कौन से प्रमुख वर्ग शामिल हुए?
उत्तर – छात्र, शिक्षक, वकील, किसान, और श्रमिक।

प्रश्न 18 (आसान). चौरी-चौरा की घटना किस राज्य में हुई थी?
उत्तर – संयुक्त प्रांत (जो अब उत्तर प्रदेश है) में।

प्रश्न 19 (मध्यम). गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को क्यों वापस लिया?
उत्तर – गांधी जी ने आंदोलन को चौरी-चौरा की हिंसक घटना के कारण वापस ले लिया, क्योंकि वे चाहते थे कि आंदोलन अहिंसक रहे।

प्रश्न 20 (कठिन). चौरी-चौरा की घटना के बाद गांधी जी की गिरफ्तारी और जज के बयान का क्या महत्व था?
उत्तर – गिरफ्तारी से गांधी जी की लोकप्रियता और बढ़ गई। जज ने भी गांधी जी को 'महान देशभक्त' बताया, जिससे ब्रिटिश सरकार की आलोचना हुई और यह साबित हुआ कि गांधी जी का प्रभाव कितना गहरा था।

» गाँधी जी का जननेता के रूप में उदय

प्रश्न 21 (आसान). गांधी जी ने कौन से कपड़े पहनना शुरू किया, जिससे वे आम लोगों से जुड़ सके?
उत्तर – साधारण धोती।

प्रश्न 22 (आसान). गांधी जी रोज क्या चलाते थे, जिससे वे शारीरिक श्रम का महत्व बताते थे?
उत्तर – चरखा।

प्रश्न 23 (मध्यम). जनता गांधी जी को 'महात्मा' क्यों कहने लगी थी? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – गांधी जी आम लोगों की तरह कपड़े पहनते थे और उनकी ही भाषा में बात करते थे। वे सामान्य जनसमूह से अलग नहीं दिखते थे।

प्रश्न 24 (कठिन). गांधी जी ने अपनी जीवनशैली में बदलाव करके भारतीय समाज के किस प्रकार के विभाजनों को तोड़ने की कोशिश की?
उत्तर – गांधी जी ने अपनी सादगीपूर्ण जीवनशैली और चरखे के प्रयोग से पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम की दीवार को तोड़ने की कोशिश की, जिससे सभी वर्गों के लोग एक साथ जुड़ सकें।

» नमक सत्याग्रह की तैयारी: पूर्ण स्वराज की घोषणा

प्रश्न 25 (आसान). कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा किस साल की?
उत्तर – 1929 में।

प्रश्न 26 (आसान). भारत का पहला 'स्वतंत्रता दिवस' कब मनाया गया?
उत्तर – 26 जनवरी 1930 को।

प्रश्न 27 (मध्यम). लाहौर अधिवेशन क्यों महत्वपूर्ण था? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – लाहौर अधिवेशन इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि इसमें जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष चुना गया और 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा की गई।

प्रश्न 28 (कठिन). गांधी जी ने 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा के तुरंत बाद कौन सा आंदोलन शुरू किया और क्यों?
उत्तर – गांधी जी ने 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा के बाद नमक सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया, क्योंकि नमक एक ऐसी मूलभूत आवश्यकता थी जिस पर ब्रिटिश सरकार ने कर लगा रखा था और उसके उत्पादन पर एकाधिकार कर लिया था। यह आम जनता के साथ एक बड़ा अन्याय था।

» दांडी यात्रा और नमक कानून तोड़ना

प्रश्न 29 (आसान). दांडी यात्रा किस वर्ष शुरू हुई थी?
उत्तर – 1930 में

प्रश्न 30 (आसान). गांधीजी ने किस कानून को तोड़ने के लिए दांडी यात्रा की थी?
उत्तर – नमक कानून

प्रश्न 31 (मध्यम). नमक कानून तोड़ने का क्या महत्व था?
उत्तर – यह ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ एक बड़ा विरोध था, जिसने आम जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी।

प्रश्न 32 (कठिन). दांडी यात्रा को 'पूर्ण स्वराज' की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम क्यों माना जाता है?
उत्तर – दांडी यात्रा ने 'पूर्ण स्वराज' की अवधारणा को साकार करने में मदद की क्योंकि इसने ब्रिटिश सरकार की सत्ता को सीधी चुनौती दी, आम जनता को एकजुट किया और उन्हें आत्मनिर्भरता का महत्व समझाया। यह सिर्फ नमक बनाने तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारत की स्वतंत्रता के लिए एक व्यापक जन आंदोलन की शुरुआत थी।

» नमक सत्याग्रह का विस्तार और सरकार की प्रतिक्रिया

प्रश्न 33 (आसान). दांडी यात्रा के बाद नमक सत्याग्रह किस तरह फैला?
उत्तर – दांडी यात्रा के बाद देश के अलग-अलग हिस्सों में लाखों लोगों ने नमक कानून का उल्लंघन किया और खुद नमक बनाना शुरू कर दिया।

प्रश्न 34 (आसान). नमक सत्याग्रह के दौरान सरकार की मुख्य प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर – सरकार ने कठोर दमन की नीति अपनाई, लोगों को गिरफ्तार किया और आंदोलन को दबाने की कोशिश की।

प्रश्न 35 (मध्यम). नमक सत्याग्रह के दौरान किन लोगों ने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपनी भागीदारी कैसे दिखाई?
उत्तर – सभी जातियों और धर्मों के लोगों ने, स्त्री-पुरुष सभी ने भाग लिया। कई सरकारी कर्मचारियों ने अपनी नौकरी छोड़ी और बड़ी संख्या में स्वयंसेवक बनकर आंदोलन से जुड़े।

प्रश्न 36 (कठिन). गांधीजी की गिरफ्तारी के बावजूद नमक सत्याग्रह क्यों नहीं रुका, बल्कि और मजबूत हुआ?
उत्तर – गांधीजी ने पहले ही कहा था कि यह आंदोलन 'एक पूरा राष्ट्र उठ खड़ा होता है' के सिद्धांत पर आधारित है। उनकी गिरफ्तारी के बावजूद, लोगों ने नेतृत्व संभाला और अपनी दृढ़ता से आंदोलन को जारी रखा, जिससे यह और भी मजबूत हुआ।

» नमक यात्रा का महत्त्व और गांधी-इर्विन समझौता

प्रश्न 37 (आसान). गांधीजी को नमक यात्रा से कौन सी पहचान मिली?
उत्तर – अंतर्राष्ट्रीय पहचान

प्रश्न 38 (आसान). गांधी-इर्विन समझौता कब हुआ था?
उत्तर – मार्च 1931

प्रश्न 39 (मध्यम). गांधी-इर्विन समझौते की दो मुख्य शर्तें क्या थीं?
उत्तर – सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेना और राजनीतिक कैदियों की रिहाई।

प्रश्न 40 (कठिन). नमक यात्रा ने ब्रिटिश सरकार की सोच को किस तरह बदल दिया?
उत्तर – नमक यात्रा के कारण अंग्रेजों को यह एहसास हुआ कि उनका राज अब ज्यादा दिन नहीं टिक पाएगा और उन्हें भारतीयों को सत्ता में हिस्सा देना ही पड़ेगा। यह सत्ता साझा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

» गोलमेज सम्मेलन और राजनीतिक गतिरोध

प्रश्न 41 (आसान). गोलमेज सम्मेलन किस शहर में आयोजित किए गए थे?
उत्तर – लंदन

प्रश्न 42 (आसान). किस समझौते के बाद गांधी जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल हुए?
उत्तर – गांधी-इर्विन समझौता

प्रश्न 43 (मध्यम). दूसरे गोलमेज सम्मेलन में गांधी जी के मुख्य दावे को किन तीन पक्षों ने चुनौती दी?
उत्तर – मुस्लिम लीग, रियासतों के राजा और डॉ. बी. आर. अंबेडकर।

प्रश्न 44 (कठिन). डॉ. अंबेडकर ने किस मांग को लेकर गांधी जी का विरोध किया और गांधी जी की इस पर क्या राय थी?
उत्तर – डॉ. अंबेडकर ने दलितों के लिए 'पृथक निर्वाचिका' की मांग की, जबकि गांधी जी का मानना था कि यह दलितों को मुख्यधारा से अलग कर देगा और उनकी दासता को स्थायी बना देगा।

» भारत छोड़ो आंदोलन और स्वतंत्रता की ओर

प्रश्न 45 (आसान). भारत छोड़ो आंदोलन कब शुरू हुआ था?
उत्तर – 1942 में

प्रश्न 46 (आसान). गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कौन सा प्रसिद्ध नारा दिया था?
उत्तर – करो या मरो

प्रश्न 47 (मध्यम). भारत छोड़ो आंदोलन शुरू होने का तात्कालिक कारण क्या था?
उत्तर – क्रिप्स मिशन की विफलता और द्वितीय विश्व युद्ध का बढ़ता दबाव।

प्रश्न 48 (कठिन). भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान समानांतर सरकारों की स्थापना का क्या महत्व था?
उत्तर – इससे भारतीयों ने यह दिखाया कि वे अपनी सरकार चला सकते हैं और अंग्रेजों के बिना भी शासन संभव है। यह आंदोलन की व्यापकता और जनता की भागीदारी का प्रतीक था।

» विभाजन की ओर: कैबिनेट मिशन और प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस

प्रश्न 49 (आसान). प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस कब मनाया गया?
उत्तर – 16 अगस्त, 1946

प्रश्न 50 (आसान). कैबिनेट मिशन भारत कब आया था?
उत्तर – 1946 की गर्मियों में

प्रश्न 51 (मध्यम). प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस का आह्वान किसने किया और क्यों?
उत्तर – मोहम्मद अली जिन्ना ने मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग के समर्थन में किया, जब कैबिनेट मिशन की बातचीत विफल हो गई।

प्रश्न 52 (कठिन). कैबिनेट मिशन की विफलता ने भारत के भविष्य पर क्या बड़ा प्रभाव डाला?
उत्तर – कैबिनेट मिशन की विफलता ने भारत के विभाजन की संभावना को बढ़ा दिया, क्योंकि कांग्रेस और मुस्लिम लीग एक संघीय व्यवस्था पर सहमत नहीं हो सके, जिससे जिन्ना ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस का आह्वान किया और देश में व्यापक हिंसा फैल गई।

» महात्मा गाँधी के अंतिम दिन और बलिदान

प्रश्न 53 (आसान). 15 अगस्त 1947 को गाँधीजी कहाँ थे और क्या कर रहे थे?
उत्तर – कलकत्ता में थे और 24 घंटे के उपवास पर थे।

प्रश्न 54 (आसान). गाँधीजी की हत्या किसने की थी?
उत्तर – नाथूराम गोडसे ने।

प्रश्न 55 (मध्यम). आज़ादी के बाद गाँधीजी ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए क्या भूमिका निभाई?
उत्तर – उन्होंने अल्पसंख्यकों के अधिकारों की पुरज़ोर वकालत की। उनके आग्रह पर कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें कहा गया कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होगा जहाँ सभी धर्मों के लोगों को पूर्ण अधिकार मिलेंगे और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा।

प्रश्न 56 (कठिन). टाइम पत्रिका ने गाँधीजी के बलिदान की तुलना किस अमेरिकी नेता के बलिदान से की और क्यों?
उत्तर – टाइम पत्रिका ने गाँधीजी के बलिदान की तुलना अब्राहम लिंकन के बलिदान से की। पत्रिका ने कहा कि जिस तरह एक धर्मांध अमेरिकी ने लिंकन को मारा क्योंकि वे नस्ल या रंग से परे सभी मनुष्यों की समानता में विश्वास करते थे, उसी तरह एक धर्मांध हिंदू ने गाँधीजी की हत्या की क्योंकि वे कठिन समय में भी दोस्ती, भाईचारे और विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्द में विश्वास करते थे।

» गाँधी जी को समझना: सार्वजनिक और निजी लेखन

प्रश्न 57 (आसान). गाँधीजी के सार्वजनिक लेखन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – जनता तक अपने विचार पहुँचाना और उन्हें प्रेरित करना।

प्रश्न 58 (आसान). निजी पत्रों में गाँधीजी किन भावनाओं को व्यक्त कर सकते थे?
उत्तर – गुस्सा, पीड़ा, असंतोष, बेचैनी, आशाएँ और हताशाएँ।

प्रश्न 59 (मध्यम). आपको क्या लगता है कि गाँधीजी ने अपने कुछ निजी पत्रों को 'हरिजन' अखबार में क्यों प्रकाशित किया होगा?
उत्तर – यह दिखाने के लिए कि निजी-सार्वजनिक का फर्क हमेशा स्पष्ट नहीं होता, और लोगों की चिट्ठियों को छापकर वे जनता की आवाज को भी महत्व देते थे।

प्रश्न 60 (कठिन). गाँधीजी के सार्वजनिक और निजी लेखन में अंतर को समझकर हम उनके नेतृत्व की कौन सी विशेषता को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं?
उत्तर – हम उनके नेतृत्व की परिपक्वता और रणनीतिक सोच को समझ सकते हैं, कि कैसे वे सार्वजनिक रूप से जनता को एकजुट रखने के लिए एक विशेष संदेश देते थे, जबकि निजी रूप से अपने सहकर्मियों के साथ खुलकर समस्याओं पर विचार-विमर्श करते थे।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत कब लौटे और उनका पहला महत्वपूर्ण सार्वजनिक भाषण कहाँ हुआ?

› पहला चरण: गांधीजी के भारत लौटने की तिथि याद करें।

› दूसरा चरण: उनके पहले सार्वजनिक भाषण के स्थान को पहचानें।

› तीसरा चरण: दोनों जानकारियों को एक साथ जोड़कर उत्तर दें।

उत्तर – महात्मा गांधी जनवरी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे और उनका पहला महत्वपूर्ण सार्वजनिक भाषण फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के उद्घाटन समारोह में हुआ।

उदाहरण 2. गांधी जी ने चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा में किन मुख्य समस्याओं पर काम किया?

› पहला, चंपारण (बिहार): यहाँ के किसान अंग्रेज़ बागान मालिकों के दबाव में नील की खेती करने पर मजबूर थे और उन्हें उनकी फसल का सही दाम नहीं मिलता था। गांधी जी ने 'सत्याग्रह' का प्रयोग करके किसानों को न्याय दिलाया।

› दूसरा, अहमदाबाद (गुजरात): यहाँ के कपड़ा मिल मज़दूरों को प्लेग बोनस के बाद भी कम वेतन मिल रहा था। गांधी जी ने भूख हड़ताल करके मज़दूरों के लिए वेतन वृद्धि करवाई।

› तीसरा, खेड़ा (गुजरात): खेड़ा में सूखा पड़ने के कारण फसल खराब हो गई थी, लेकिन सरकार किसानों से पूरा लगान वसूल कर रही थी। गांधी जी ने किसानों को लगान न देने के लिए प्रोत्साहित किया और सरकार को झुकना पड़ा।

उत्तर – गांधी जी ने चंपारण में नील किसानों के शोषण के खिलाफ, अहमदाबाद में मिल मज़दूरों के कम वेतन के खिलाफ, और खेड़ा में सूखे के कारण लगान माफी के लिए आंदोलन किए।

उदाहरण 3. रॉलेट सत्याग्रह का प्रमुख कारण क्या था और इसके एक महत्वपूर्ण परिणाम का उल्लेख करें?

› पहला कदम: कारण पहचानें। रॉलेट सत्याग्रह का मुख्य कारण 'रॉलेट एक्ट' था।

› दूसरा कदम: रॉलेट एक्ट क्या था, यह बताएं। यह एक ऐसा कानून था जिसके तहत ब्रिटिश सरकार बिना किसी मुकदमे के किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करके जेल में डाल सकती थी। यह भारतीयों के मौलिक अधिकारों का हनन था।

› तीसरा कदम: एक महत्वपूर्ण परिणाम बताएं। रॉलेट एक्ट के विरोध में देशव्यापी प्रदर्शन हुए, हड़तालें हुईं और शांतिपूर्ण सभाओं पर भी दमन किया गया, जिसका सबसे भयानक रूप जलियाँवाला बाग हत्याकांड था।

› चौथा कदम: यह भी बताएं कि जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने गांधी जी को एक बड़े राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया और राष्ट्रीय आंदोलन में एक नया मोड़ ला दिया।

उत्तर – रॉलेट सत्याग्रह का प्रमुख कारण 1919 का 'रॉलेट एक्ट' था, जिसने सरकार को बिना मुकदमा चलाए किसी भी व्यक्ति को अनिश्चितकाल के लिए हिरासत में रखने का अधिकार दिया था। इसका एक महत्वपूर्ण परिणाम जलियाँवाला बाग हत्याकांड था, जहाँ शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाई गईं, जिससे पूरे देश में गहरा आक्रोश फैल गया और गांधी जी एक राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरे।

उदाहरण 4. असहयोग आंदोलन के मुख्य सिद्धांतों और इसकी व्यापकता को संक्षेप में समझाइए।

› पहला सिद्धांत था 'बहिष्कार' (boycott)। यानी, भारतीय अंग्रेज़ों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों, कॉलेजों और अदालतों में जाना छोड़ दें। वकील अपनी वकालत छोड़ दें, छात्र स्कूल-कॉलेज छोड़ दें।

› दूसरा सिद्धांत था कर (tax) न चुकाना। अंग्रेज़ों को आर्थिक रूप से कमज़ोर करना।

› गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया। खिलाफत आंदोलन भारतीय मुसलमानों का था, जो तुर्की के खलीफा को फिर से स्थापित करने की मांग कर रहे थे। गांधी जी ने सोचा कि इससे हिंदू-मुस्लिम एकता बढ़ेगी और आंदोलन और मज़बूत होगा।

› इस आंदोलन में केवल पढ़े-लिखे लोग ही नहीं, बल्कि लाखों किसानों, मज़दूरों, छात्रों और कारीगरों ने भाग लिया। उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन कानूनों को तोड़ा, अवध के किसानों ने कर नहीं दिए, और कुमाऊं के किसानों ने अंग्रेज़ों का सामान ढोने से मना कर दिया।

› लोग अपने-अपने तरीके से 'असहयोग' का मतलब समझकर इसमें शामिल हुए, जिससे यह एक सच्चा जन-आंदोलन बन गया।

उत्तर – असहयोग आंदोलन मुख्य रूप से ब्रिटिश संस्थाओं के बहिष्कार और 'एक वर्ष में स्वराज' के लक्ष्य पर आधारित था। खिलाफत आंदोलन के साथ मिलकर यह एक व्यापक जन-आंदोलन बना जिसमें समाज के हर वर्ग ने अपनी-अपनी तरह से भाग लिया।

उदाहरण 5. असहयोग आंदोलन में विभिन्न वर्गों की भागीदारी और उसकी वापसी के कारणों को संक्षेप में समझाइए।

› पहला चरण: जन-आधार को पहचानना। असहयोग आंदोलन सिर्फ कुछ नेताओं का नहीं था, बल्कि इसमें छात्रों ने स्कूल-कॉलेज छोड़े, वकीलों ने अदालतें छोड़ीं।

› दूसरा चरण: किसानों और श्रमिकों की भागीदारी बताना। गाँवों में किसानों ने बेगार और ज़्यादा लगान के खिलाफ आंदोलन किया। मजदूरों ने हड़तालें कीं। गांधी जी ने सरल जीवन अपनाकर सबको साथ जोड़ा।

› तीसरा चरण: आंदोलन वापसी का कारण बताना। फरवरी 1922 में, गोरखपुर के पास चौरी-चौरा गाँव में प्रदर्शनकारियों की भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी, जिसमें कई पुलिसकर्मी मारे गए।

› चौथा चरण: गांधी जी के निर्णय का महत्व समझाना। गांधी जी अहिंसा के सिद्धांत पर अडिग थे। इस हिंसक घटना से दुखी होकर उन्होंने तुरंत आंदोलन वापस लेने की घोषणा की, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि आंदोलन हिंसा का रूप ले।

› पांचवां चरण: वापसी के बाद की स्थिति। आंदोलन वापस लेने के बाद गांधी जी को मार्च 1922 में गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें 6 साल की जेल हुई, लेकिन इससे लोगों में उनका सम्मान और बढ़ गया।

उत्तर – असहयोग आंदोलन में छात्र, वकील, किसान और श्रमिक जैसे विभिन्न वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिससे यह एक व्यापक जन-आंदोलन बन गया। हालांकि, फरवरी 1922 में चौरी-चौरा की हिंसक घटना, जिसमें एक पुलिस थाने को आग लगा दी गई थी, के कारण महात्मा गांधी ने तुरंत आंदोलन वापस ले लिया, क्योंकि उनका सिद्धांत अहिंसा पर आधारित था।

उदाहरण 6. गांधी जी ने जननेता बनने के लिए अपनी जीवनशैली में क्या बदलाव किए?

› पहला कदम, गांधी जी ने बाकी बड़े नेताओं की तरह पश्चिमी सूट या बंदगला जैसे औपचारिक कपड़े पहनने छोड़ दिए।

› दूसरा कदम, उन्होंने एक साधारण धोती अपनाई। यह सिर्फ कपड़े नहीं थे, ये गरीबों और किसानों के साथ अपनी पहचान बनाने का तरीका था।

› तीसरा कदम, उन्होंने हर दिन चरखा चलाने में समय बिताया। इससे उन्होंने शारीरिक श्रम को महत्व दिया और सबको आत्मनिर्भर बनने का संदेश दिया।

› चौथा कदम, उन्होंने हमेशा आम लोगों की भाषा में बात की, न कि केवल पढ़े-लिखे लोगों की भाषा में।

› पाँचवां कदम, उन्होंने गरीब किसानों और श्रमिकों से सीधा जुड़ाव बनाया, उनकी समस्याओं को अपनी समस्या समझा।

› छठा कदम, उन्होंने केवल राजनीतिक मुद्दों पर ही बात नहीं की, बल्कि साफ-सफाई, शिक्षा जैसे सामाजिक मुद्दों पर भी ध्यान दिया, जिससे आम लोग उनसे और ज्यादा जुड़े।

उत्तर – गांधी जी ने अपनी जीवनशैली को अत्यंत सादा बनाया, उन्होंने धोती पहनना शुरू किया, चरखे का प्रयोग किया, और आम लोगों की भाषा में बात करके स्वयं को जन-साधारण के बीच स्थापित किया।

उदाहरण 7. गांधी जी ने नमक सत्याग्रह की शुरुआत करने से पहले कौन-कौन से महत्वपूर्ण कदम उठाए?

› पहला कदम था 1929 का लाहौर अधिवेशन, जहाँ कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पारित किया।

› दूसरा कदम था 26 जनवरी 1930 को देश भर में 'स्वतंत्रता दिवस' मनाना, जिससे लोगों में आजादी की भावना और मजबूत हुई।

› इन कदमों से जनता को आगामी आंदोलन के लिए मानसिक रूप से तैयार किया गया और फिर गांधी जी ने नमक कानून तोड़ने का फैसला लिया।

उत्तर – गांधी जी ने पूर्ण स्वराज की घोषणा और स्वतंत्रता दिवस का आयोजन करके नमक सत्याग्रह की मजबूत नींव रखी।

उदाहरण 8. दांडी यात्रा कब और कहाँ से शुरू हुई, और इसका मुख्य उद्देश्य क्या था?

› पहला कदम: हमें याद रखना है कि दांडी यात्रा की शुरुआत महात्मा गांधी ने की थी।

› दूसरा कदम: यह यात्रा 12 मार्च, 1930 को गुजरात के साबरमती आश्रम से शुरू हुई थी।

› तीसरा कदम: इसका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों के 'नमक कानून' को तोड़ना था, जिसके तहत सिर्फ ब्रिटिश सरकार को ही नमक बनाने और बेचने का अधिकार था।

उत्तर – दांडी यात्रा 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से शुरू हुई और इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण नमक कानून को तोड़ना था।

उदाहरण 9. नमक सत्याग्रह के विस्तार और सरकार की प्रतिक्रिया पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

› पहले नमक सत्याग्रह के 'विस्तार' वाले बिंदुओं पर सोचें: गांधीजी की दांडी यात्रा के बाद पूरे देश में क्या हुआ? लोगों ने कैसे हिस्सा लिया? (जैसे, अलग-अलग जगहों पर नमक बनाया गया, लोग सरकारी नौकरी छोड़ने लगे, स्वयंसेवक बने).

› फिर 'सरकार की प्रतिक्रिया' वाले बिंदुओं पर ध्यान दें: सरकार ने इस फैलते आंदोलन को रोकने के लिए क्या किया? (जैसे, लोगों को गिरफ्तार किया गया, दमन की नीति अपनाई गई).

› अंत में, इन सभी बातों को संक्षेप में और व्यवस्थित तरीके से लिखें, उदाहरण के लिए गांधीजी की गिरफ्तारी का उल्लेख करें.

उत्तर – नमक सत्याग्रह का प्रभाव केवल दांडी तक सीमित नहीं रहा। गांधीजी के नमक कानून तोड़ने के बाद, देश के विभिन्न हिस्सों में लाखों लोगों ने नमक कानून का उल्लंघन किया, खुद नमक बनाया और बेचा। सरकारी नौकरियों में काम करने वाले कई भारतीयों ने अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया और बड़ी संख्या में स्वयंसेवक राष्ट्रवादी आंदोलन से जुड़ गए। इन सभाओं में सभी जातियों और धर्मों के लोग शामिल हुए।

सरकार ने इस बढ़ते आंदोलन को रोकने के लिए कठोर दमनकारी नीति अपनाई। पूरे देश से 60,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिसमें स्वयं महात्मा गांधी भी शामिल थे। सरकार ने आंदोलन को कुचलने का प्रयास किया, लेकिन इससे लोगों का मनोबल और भी बढ़ा।

उदाहरण 10. नमक यात्रा के उन तीन मुख्य महत्त्वों को बताइए जिन्होंने ब्रिटिश सरकार को गांधी-इर्विन समझौता करने पर मजबूर किया।

› पहला महत्व था कि इस यात्रा ने महात्मा गांधी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई। यूरोप और अमेरिका के अखबारों में नमक यात्रा की खबरें छपीं, जिससे दुनिया भर में भारत के स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी पहुंची।

› दूसरा महत्व था कि यह पहली बार था जब महिलाओं ने इतनी बड़ी संख्या में राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लिया। कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी नेताओं ने गांधीजी को समझाया कि महिलाओं को भी शामिल करना ज़रूरी है, और हजारों महिलाओं ने गिरफ्तारी दी।

› तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण महत्व यह था कि नमक यात्रा ने अंग्रेजों को यह एहसास करा दिया कि अब वे भारत पर लंबे समय तक राज नहीं कर पाएंगे और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना होगा। इसी दबाव के कारण ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोलमेज सम्मेलन बुलाए और अंततः गांधीजी से बात करने पर मजबूर हुई।

› इन्हीं सब कारणों से गांधीजी और वायसराय लॉर्ड इर्विन के बीच मार्च 1931 में समझौता हुआ, जिसे गांधी-इर्विन समझौता कहते हैं। इसके तहत सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लिया गया, राजनीतिक कैदियों को रिहा किया गया और तटीय इलाकों में नमक बनाने की अनुमति दी गई।

उत्तर – नमक यात्रा के तीन मुख्य महत्त्व थे: 1. महात्मा गांधी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। 2. महिलाओं की राष्ट्रीय आंदोलन में अभूतपूर्व भागीदारी हुई। 3. ब्रिटिश सरकार को भारतीयों को सत्ता में हिस्सा देने की आवश्यकता महसूस हुई, जिसके परिणामस्वरूप गांधी-इर्विन समझौता हुआ।

उदाहरण 11. गोलमेज सम्मेलन क्यों बुलाए गए थे और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में मुख्य गतिरोध क्या थे?

› ब्रिटिश सरकार ने भारत में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा और सभी भारतीय हितधारकों को एक मंच पर लाने के लिए लंदन में गोलमेज सम्मेलन बुलाए।

› पहला गोलमेज सम्मेलन (नवंबर 1930) सफल नहीं रहा क्योंकि कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया था।

› गांधी-इर्विन समझौते के बाद, महात्मा गांधी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करते हुए दूसरे गोलमेज सम्मेलन (1931) में भाग लिया।

› मुख्य गतिरोध यह था कि कांग्रेस ने दावा किया कि वह पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे मुस्लिम लीग (जो मुसलमानों के हितों की बात करती थी), रियासतों के राजा (जो अपनी स्वायत्तता चाहते थे) और डॉ. बी. आर. अंबेडकर (जो दलितों के लिए पृथक निर्वाचिका चाहते थे) ने चुनौती दी।

› खासकर, डॉ. अंबेडकर ने दलितों के लिए अलग मतदाता मंडल (पृथक निर्वाचिका) की मांग की, जबकि गांधी जी का मानना था कि इससे समाज में और विभाजन होगा और दलित मुख्यधारा से अलग-थलग पड़ जाएंगे।

› इन मतभेदों के कारण, दूसरा गोलमेज सम्मेलन किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच सका और गांधी जी को खाली हाथ लौटना पड़ा।

उत्तर – गोलमेज सम्मेलन भारतीय संवैधानिक सुधारों पर चर्चा के लिए बुलाए गए थे। दूसरे सम्मेलन में मुख्य गतिरोध विभिन्न भारतीय दलों (कांग्रेस, मुस्लिम लीग, रियासतें, अंबेडकर) के बीच पृथक निर्वाचिका और प्रतिनिधित्व के दावों को लेकर था।

उदाहरण 12. क्रिप्स मिशन की विफलता ने भारत छोड़ो आंदोलन को कैसे जन्म दिया? समझाइए।

› पहला चरण: द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों को भारत के सहयोग की जरूरत थी।

› दूसरा चरण: इसलिए 1942 में उन्होंने क्रिप्स मिशन भेजा, जिसमें भारतीयों को युद्ध के बाद 'डोमिनियन स्टेटस' का वादा किया गया।

› तीसरा चरण: लेकिन कांग्रेस पूर्ण स्वराज चाहती थी, न कि डोमिनियन स्टेटस, और मुस्लिम लीग भी अपने लिए अलग देश की मांग कर रही थी।

› चौथा चरण: क्रिप्स मिशन इन मांगों को पूरा करने में विफल रहा और बिना किसी ठोस समाधान के वापस चला गया।

› पांचवां चरण: इस विफलता से भारतीय नेताओं को समझ आ गया कि अंग्रेज ईमानदारी से आजादी देने को तैयार नहीं हैं, जिससे निराशा और गुस्सा बढ़ा।

› छठा चरण: गांधीजी ने तब 'करो या मरो' का नारा दिया और 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया, ताकि अंग्रेजों पर भारत छोड़ने का सीधा दबाव बनाया जा सके।

उत्तर – क्रिप्स मिशन की विफलता ने भारतीयों को यह समझा दिया कि अंग्रेजों से सिर्फ बातचीत से आजादी नहीं मिलेगी, जिसके बाद गांधीजी ने 'करो या मरो' का नारा देते हुए 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत की।

उदाहरण 13. 1946 में भारत भेजे गए ब्रिटिश मिशन का नाम क्या था, और इसका मुख्य उद्देश्य क्या था?

› पहचानें कि प्रश्न 1946 के ब्रिटिश मिशन के बारे में है।

› याद करें कि 1946 में, ब्रिटिश सरकार ने भारत में संवैधानिक सुधारों और सत्ता हस्तांतरण पर बातचीत के लिए एक दल भेजा था।

› इस दल का नाम 'कैबिनेट मिशन' था।

› इसका मुख्य उद्देश्य कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक ऐसी संघीय व्यवस्था (federal system) पर सहमत कराना था जिसमें प्रांतों को कुछ स्वायत्तता मिल सके, ताकि भारत को बिना विभाजन के आज़ादी दी जा सके।

› हालांकि, यह मिशन असफल रहा, जिससे विभाजन की राह खुली।

उत्तर – 1946 में भारत भेजे गए ब्रिटिश मिशन का नाम 'कैबिनेट मिशन' था। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के लिए एक संघीय व्यवस्था का प्रस्ताव करके भारत को बिना विभाजन के स्वतंत्रता दिलाना था, लेकिन यह असफल रहा।

उदाहरण 14. गाँधीजी ने 1947-48 के दौरान भारत में सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए क्या प्रयास किए?

› गाँधीजी ने पीड़ितों को सांत्वना दी, अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों का दौरा किया।

› उन्होंने सिखों, हिंदुओं और मुसलमानों से अतीत को भूलकर भाईचारा बढ़ाने का आह्वान किया।

› उनके आग्रह पर, कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें सभी नागरिकों को धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना समान अधिकार और सुरक्षा देने की बात कही गई।

› उन्होंने अपनी प्रार्थना सभाओं में कुरान की आयतें पढ़कर सभी धर्मों के प्रति सम्मान दर्शाया, भले ही कुछ लोग इसका विरोध करते थे।

› दिल्ली में दंगों को रोकने और शांति स्थापित करने के लिए अनशन भी किया।

उत्तर – गाँधीजी ने व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलकर, शांति का आह्वान करके, कांग्रेस के माध्यम से अल्पसंख्यकों के अधिकारों की वकालत करके, और अपनी प्रार्थना सभाओं के ज़रिए सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के अनेक प्रयास किए।

उदाहरण 15. गाँधीजी के राजनीतिक विचारों और भावनाओं को समझने के लिए 'सार्वजनिक भाषण' और 'निजी पत्रों' की भूमिका का तुलनात्मक विश्लेषण करें।

› सबसे पहले, सार्वजनिक भाषणों को समझें। ये ऐसे स्रोत हैं जो गाँधीजी के उन विचारों को दर्शाते हैं जिन्हें वे जनता तक पहुँचाना चाहते थे। इनमें राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा, नैतिक सिद्धांत और समाज के लिए उनका संदेश शामिल होता था। ये बातें सामान्यतः सकारात्मक और प्रेरणादायक होती थीं ताकि जनता में उत्साह बना रहे।

› दूसरा, उनके निजी पत्रों पर ध्यान दें। ये पत्र हमें उनके अंदरूनी संघर्षों, व्यक्तिगत भावनाओं, निराशाओं, और कभी-कभी गुस्से की भी झलक देते हैं। जैसे, नेहरू या सरदार पटेल को लिखे गए पत्रों में वे अपनी चिंताएं या अलग राय भी व्यक्त करते थे, जो सार्वजनिक मंच पर शायद ना करते।

› अब दोनों की तुलना करें। सार्वजनिक भाषणों में गाँधीजी की छवि एक बड़े नेता की होती थी जो देश को दिशा दे रहा है, जबकि निजी पत्रों में वे एक इंसान के रूप में सामने आते हैं जो समस्याओं से जूझ रहा है और अपने प्रियजनों से खुलकर बात कर रहा है।

› अंत में, इस तुलना से हम गाँधीजी के व्यक्तित्व और राजनीति को और गहराई से समझ पाते हैं। हमें पता चलता है कि वे एक साधारण इंसान भी थे, जिनके मन में भी शंकाएँ, पीड़ा और असंतोष होता था, लेकिन सार्वजनिक रूप से वे हमेशा दृढ़ और आशावादी दिखते थे।

उत्तर – गाँधीजी के सार्वजनिक भाषण उनके व्यापक विचारों, राष्ट्रीय नीतियों और जन-प्रेरणा को दर्शाते हैं, जबकि उनके निजी पत्र उनके व्यक्तिगत भावनाओं, अंदरूनी संघर्षों और असंतुष्टि को उजागर करते हैं। दोनों का अध्ययन उनके संपूर्ण व्यक्तित्व और राजनीतिक सोच को गहराई से समझने में मदद करता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• गांधीजी के भारत आगमन की तिथि और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के भाषण का महत्व, ये बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी बिंदु हैं। इन्हें अच्छे से समझना और याद करना।

• इन तीनों आंदोलनों के नाम, उनके वर्ष और उनसे जुड़े मुख्य मुद्दे बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं। इन्हें विस्तार से याद रखना।

• रॉलेट एक्ट के प्रावधान, रॉलेट सत्याग्रह का उद्देश्य और जलियाँवाला बाग हत्याकांड की तारीख व उसके परिणामों को बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत अच्छे से याद रखना। यह अक्सर दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों में आता है।

• यह आंदोलन और खिलाफत आंदोलन के साथ इसका जुड़ाव बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। इसकी शुरुआत, उद्देश्य और विभिन्न सामाजिक वर्गों की भागीदारी को अच्छे से समझना बहुत ज़रूरी है।

• बोर्ड परीक्षा में, 'गांधी जी द्वारा आंदोलन वापसी' के कारण को चौरी-चौरा घटना से जोड़कर लिखना और गांधी जी के अहिंसा के सिद्धांत पर जोर देना बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आता है कि गांधी जी 'जननेता' कैसे बने। उनके पहनावे, भाषा और चरखे के महत्व को विस्तार से समझाना बहुत जरूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा, लाहौर अधिवेशन, और नमक सत्याग्रह के संबंध में प्रश्न के रूप में आता है, तो इन तिथियों और घटनाओं को अच्छे से याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! दांडी यात्रा की तारीख, शुरुआत स्थान, और नमक कानून तोड़ने के प्रतीकात्मक महत्व को ध्यान से याद रखना। नमक सत्याग्रह क्यों चुना गया, इस पर अक्सर सवाल आते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 5 अंकों के प्रश्न में आता है, जहाँ आपको विस्तार और सरकारी प्रतिक्रिया दोनों पर ध्यान देना होता है। गांधीजी के भाषण के अंशों का भी उल्लेख करें।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 या 5 अंकों में पूछा जाता है। नमक यात्रा के तीनों महत्त्वों को बिंदुवार लिखिए और गांधी-इर्विन समझौते की मुख्य शर्तों का भी उल्लेख कीजिए।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! खासकर गांधी जी और अंबेडकर के बीच 'पृथक निर्वाचिका' पर बहस को अच्छे से समझना और उसके कारणों व परिणामों को लिखना बहुत जरूरी है। इसपर अक्सर सीधा प्रश्न आता है।

• यह आंदोलन आपके बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! इसके कारणों, परिणामों, गांधीजी की भूमिका और युवा कार्यकर्ताओं के योगदान को विस्तार से समझें और याद रखें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। 'कैबिनेट मिशन' के उद्देश्य, 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' की तारीख और उसके परिणामों को विस्तार से समझकर लिखें। कारण और प्रभाव पर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! गाँधीजी के विभाजन के दौरान के विचार, शांति के लिए उनके प्रयास और उनकी हत्या से जुड़े प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। इन बिंदुओं को ध्यान से पढ़ना और समझना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गाँधीजी को 'एक व्यक्ति' और 'एक नेता' दोनों रूपों में समझने की आपकी क्षमता का परीक्षण करता है। हमेशा उदाहरणों के साथ दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› गांधीजी 1915 में लौटे; 1916 BHU भाषण; गरीब किसानों पर ज़ोर।

› गांधी के पहले तीन स्थानीय संघर्ष: चंपारण, अहमदाबाद, खेड़ा - गरीबों के नेता बने।

› रॉलेट एक्ट 1919, जलियाँवाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919, गांधी जी का पहला देशव्यापी सत्याग्रह।

› असहयोग: स्वराज हेतु बहिष्कार व खिलाफत से जन-आंदोलन बना।

› असहयोग जन-आंदोलन बना (छात्र, किसान, श्रमिक); चौरी-चौरा हिंसा (1922) से गांधीजी ने वापस लिया।

› गांधी जी की सादगी (धोती, चरखा, आम भाषा) ने उन्हें जननेता बनाया।

› 1929 लाहौर अधिवेशन: पूर्ण स्वराज घोषणा; 1930: स्वतंत्रता दिवस, नमक सत्याग्रह तैयारी।

› गांधीजी ने 1930 में साबरमती से दांडी यात्रा कर नमक कानून तोड़ा, जन-आंदोलन का प्रतीक।

› नमक सत्याग्रह पूरे भारत में फैला; सरकार ने 60,000+ लोगों को गिरफ्तार किया, गांधीजी सहित।

› नमक यात्रा: गांधीजी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान, महिलाओं की भागीदारी, अंग्रेजों की सत्ता साझा करने की स्वीकृति, गांधी-इर्विन समझौता।

› गोलमेज सम्मेलन: भारतीय दलों में मतभेद, पृथक निर्वाचिका पर गतिरोध।

› 1942, क्रिप्स मिशन विफल, गांधीजी का 'करो या मरो', स्वतंत्रता की ओर निर्णायक कदम।

› कैबिनेट मिशन (1946) असफल; जिन्ना ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (16 अगस्त, 1946) घोषित किया, जिससे विभाजन की ओर हिंसा भड़की।

› गाँधीजी का अंतिम समय: विभाजन से दुख, शांति प्रयास, अल्पसंख्यकों के अधिकार, 30 जनवरी 1948 बलिदान।

› गाँधीजी के सार्वजनिक-निजी लेखन: विचारों व भावनाओं के स्रोत।